गरज़, एक दिन राजा ने, किसी काम के लिये, समुद्र कनारे उस राजपुत्र को भेजा. वह जब कनारे पहुंचा तो उसने एक देवी का मंदिर देखा. उस में जा, देवी की पूजा की. लेकिन जब यह वहां से बाहर निकला तो वोंहीं उसके पीछे से एक सुंदर नायका आ उससे पूछने लगी ऐ पुरुष! तू किस लिये यहां आया है? वह बोला ऐश के लिये आया हूं; और तेरे रूप को देख, मैं मफ़तून हुआ हूं. उसने कहा जो मुझ से कुछ इरादः रखता है, तो पहले इस कुण्ड में जाके अश्नान कर; फिर उस के पीछे जो तू मुझे कहेगा सो मैं सुनूंगी.

यह सुनतेही, वह कपड़े उतार, तालाब में पैठ, गोता मार, निकलकर देखे तो अपने नगर में खड़ा है. इस अचंभे को देख, तरसनाक हो, लाचार अपने घर जा, और कपड़े पहन, राजा के पास आ सब वृतान्त कहा. राजा ने सुनतेही कहा मुझे भी यह अचंभा दिखा. यह कहतेही, सवारी मंगा, दोनों सवार हो कर चले. कितने दिनों के अरसे में, सागर के किनारे आये. उसी देवी के मंदिर में जाकर पूजा की. फिर राजा जब बाहर निकला, तो वही नायका, एक सखी साथ लिये, राजा के पास आन खड़ी हुई. और राजा का रूप देख, मोहित हो बोली ऐ राजा! जो मुझे आज्ञा दे सो करूं. राजा ने उसे उत्तर दिया जो तू मेरा कहा करे तो मेरे सेवक की स्त्री हो. वह बोली मैं तेरे रूप की आधीन हुई हूं; इसकी जोरू किस तरह से होऊं. राजाने कहा अभी तो

तू ने मुझ से कहा जो तू हुकम करेगा सो मैं करूंगी. और सज्जन जिस बात को कहते हैं उसका निबाह करते हैं. अपने बचन को पाल; मेरे सेवक की जोरू हो. यह सुन के वह बोला जो आप ने कहा सो मुझे प्रमान है. तब राजा, सेवक का गंधर्व बिवाह कर, दोनों को साथ ले, अपने राजधाम में आया.

इतनी बात कह, बैताल बोला राजा! बताओ स्वामी और सेवक में किस का सत अधिक हुआ. राजा बोला सेवक का. फिर बैताल बोला कि जिस राजा ने ऐसी सुंदर स्त्री पा सेवक को दी तिस राजा का सत अधिक न हुआ. तब राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा जिनका धर्म उपकार करना है, तिनके उपकार करने में अधिक क्या है. और जो आपकाजी हो परकाज करे, सोही अधिक है. इस कारन सेवक का सत अधिक हुआ. यह बात सुन, बैताल उसी तरवर पर जा लटका. और राजा जा, फिर उसे वहां से उतार, कांधे पर रख ले चला.

नवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! मदनपुर नाम एक नगर है. वहां बीरबर(१) नाम राजा था. और उसी देस में हिरन्यदत्त(२) नाम एक बनिया; कि उसकी बेटी का नाम मदन-

(१) वीरवर. (२) हिरण्यदत्त.

सेना था. वह एक रोज़ बसंत ऋतु में, सखियों को साथ लिये, अपने बाग़ में, वास्ते सैर और तमाशे के गई. इत्तिफ़ाक़न, उस के आने से पेशतर, धर्मदत्त सेठ का बेटा, सोमदत्त नाम, अपने मित्र को साथ लिये, बन बिहार को आया था. वहां से फिरता हुआ उस बाड़ी में आन पहुंचा. इसे देख मोहित हो गया. और अपने दोस्त से कहने लगा भाई! वह कदाचित मुझ से मिले तो मेरा जीवन सुफल हो; और जो न मिले तो इस दुनिया में जीना अबस है.

यह अपने दोस्त से बातें कर, बिरह में व्याकुल हो, बेइख़्तियार उस के पास जा, उसका हाथ पकड़के कहने लगा जो तू मुझसे प्रीत न करेगी तो मैं तेरे ऊपर अपना प्राण दूंगा. वह बोली ऐसा मत कीजो; इस में पाप होगा. तब उनने कहा तेरे करिश्मे ने मेरे दिल को छेदा है. और तेरी बिरह की आग ने मेरे शरीर को जला दिया. इस पीर से मेरी सुद्ध बुद्ध सब जाती रही है. और मुझे इस समैं इश्क़ के ग़लबे से धर्म अधर्म का लिहाज़ नहीं है. पर जो तू मुझे बचन दे तो मेरे जी में जी आवे. वह बोली आज के पांचवें दिन मेरी शादी होगी, तो पहले मैं तुझ से मिल जाऊंगी; पीछे अपने शौहर के यहां रहूंगी. यह बचन दे, सौगंद खा, वह अपने घर को गई. और यह अपने घर आया.

ग़रज़ पांचवें दिन उसकी शादी हुई. ख़ाविंद उसका ब्याह कर उसे अपने घर ले आया. कितने एक दिनों के

पीछे, रात के वक़, उसकी दिवरानी जिठानी ने ज़बरदस्ती उसे उसके पति के पास भेजा. वह रंगमहल में जा, चुप चाप एक कोने में बैठ रही. इस अरसे में उसके ख़सम ने जो देखा तो उसका हाथ पकड़ सेज पर बिठा लिया. ग़रज़, उनने जब चाहा कि गले लगाऊं तो उसने हाथ से झिड़क दिया; और जो जो उस साहूकार बच्चे से क़ौल क़रार हुआ था सो सब बयान किया. यह सुनके, उसके ख़ाविंद ने कहा, जो सच उसके पास जाया चाहती है तो जा.

वह, अपने स्वामी की आज्ञा पा, उस सेठ के स्थान को चली. राह में चोर ने, उसे देख, ख़ुश हो, इसके पास आकर कहा कि तू दोपहर रात के समैं, इस अंधेरे में, ऐसे वस्त्र आभूषण पहन के, अकेली कहां जाती है? वह बोली जिस जगह मेरा प्रीतम प्यारा बसता है. यह सुन, चोरने कहा यहां तेरा सहायक कौन है? वह कहने लगी धनुष बान लिये मदन मेरा सहाय करनेवाला साथ है. यह कह, फिर चोरके आगे सारी अपनी अव्वल औ आख़िर की कथा बयान करके कहा कि मेरा सिंगार भंग मत कर. मैं तुझे बचन दिये जाती हूं, वहां से जब फिरूंगी तब गहना तेरे हवाले करूंगी.

यह सुनके, चोरने अपने दिल में कहा गहना देने का तो मुझे बचन दिये जाती है; फिर क्यों इसका सिंगार भंग करूं. यह समझकर, उसे छोड़ दिया. आप वहां बैठा रहा. और यह वहां गई कि जहां सोमदत्त पड़ा

सोता था. जातेही जो इसने उसे अचानक जगाया, तो वह घबराकर उठा; और कहने लगा तू देवकन्या है, कि ऋषिकन्या, या नागकन्या है? सच कह, तू कौन है? और मेरे पास कहां से आई है? वह बोली कि मैं नरकन्या हूं. और हिरन्यदत्त सेठ की बेटी. मदनसेना मेरा नाम है. और तुझे याद नहीं जो उस उपबन में तू ज़बरदस्ती मेरा हाथ पकड़ के क़सम को बजिद हुआ था. और मैंने, बमूजिब तेरे कहने के, यह सोगंद की थी कि बिवाहता पुरुष को त्याग करके तेरे पास आऊंगी. सो मैं आई हूं. जो तेरी इच्छा में आवे सो कर.

फिर उनने पूछा कि यह तूने वृत्तांत अपने पति के आगे कहा या नहीं. इनने उत्तर दिया कि मैंने तमाम अहवाल कहा. और उनने सब दरियाफ़त करके मुझे तेरे पास बिदा किया. सोमदत्त बोला यह बात ऐसे है, जैसे बिना बस्त्र का गहना, या बिना घीके भोजन, या बग़ैर सुर के गाना, यह सब एक सा है. इसी तरह, मैले बसन तेज को हरे, कुभोंजन बल को, कुभार्या प्राण को, कुपुच कुल को हरे. और राक्षस ख़फ़ा होता है तो प्राण को लेता है, पर स्त्री, हित और अहित में दोनों तरह से, दुख देनेवाली है. स्त्री जो न करे सो थोड़ा. क्योंकि जो बात इस के मन में रहती है, सो ज़बान पर नहीं लाती; और जो ज़बान में है, उसे ज़ाहिर नहीं करती; और जो करती है सो कहती नहीं. स्त्री को संसार में भगवान ने अजब कोई पैदा किया है.

इतनी बातें कह, उस सेठ के बेटे ने इसे जवाब दिया कि मैं पराई औरत से इलाक़ा नहीं रखता. यह सुनके फिर उलटी अपने घर को चली. राह में उस चोर से भेंट हुई. उसके आगे सब वृत्तांत कहा. चोरने सुनके शाबाशी दे छोड़ दिया. यह अपने पति के निकट आई; और उसे तमाम अहवाल बयान किया. पर उसके खाविंद ने उसे प्यार न किया; और कहा, कोयल का सुरही रूप है, और नारीका रूप पतिबरत, और कुरूप मनुष का रूप बिद्या, तपसी का रूप क्षमा.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा! इन तीनों में से किसका सत अधिक है? राजा बिक्रमाजीत ने कहा चोर का सत अधिक है. बैताल ने कहा किस तरह? राजा ने कहा और पुरुष पर उसकी इच्छा देख स्वामी ने छोड़ा. राजाका डर मान सोमदत्तने छोड़ा. और चोरको छोड़ने का कुछ कारन न था. इस से चोरही प्रधान है. यह सुन, बैताल फिर रूख में जा लटका. और राजा भी वहां जा, उसे दरख़त से उतार, बांध कांधे पर रख, फिर ले चला.

दसवीं कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! गोड़ (१) देस में बरद्मान एक नगर है. और गुणशेखर नाम वहां का राजा था. उसका मंत्री एक सरावगी अभैचंद (२) नाम था. उसके

(१) गौड़. (२) अभयचन्द्र.